आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 16/06/2025; Accepted: 13/9/2025; Published: 28/03/2026

प्राथमिक शिक्षा प्रगति पर सर्व शिक्षा अभियान के प्रभाव का अध्ययनशील मूल्यांकन

[1]नीरज कुमार चौधरी

रिसर्च स्कॉलर,

बी आर ए बी यू, मुजफ्फरपुर, बिहार

[2]डॉ. लक्ष्मी रानी

विभाग अध्यक्ष, मनो विज्ञान विभाग

एम एस के बी, महाविध्यालय

मुजफ्फरपुर

[1]नीरज कुमार चौधरी, [2]डॉ. लक्ष्मी रानी, प्राथमिक शिक्षा प्रगति पर सर्व शिक्षा अभियान के प्रभाव का अध्ययनशील मूल्यांकन, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 1/मार्च 2026**,(3 -13)

https://doi.org/10.5281/zenodo.19485491

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

अनुरूपी लेखक : [1]नीरज कुमार चौधरी, रिसर्च स्कॉलर, बी आर ए बी यू, मुजफ्फरपुर, बिहार

सह लेखक: [2]डॉ. लक्ष्मी रानी, विभाग अध्यक्ष, मनो विज्ञान विभाग, एम एस के बी, महाविध्यालय, मुजफ्फरपुर

शोध सारांश

वर्तमान शोध पत्र में **प्राथमिक शिक्षा प्रगति पर सर्व शिक्षा अभियान के प्रभाव** का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में यह देखा जाएगा कि प्राथमिक शिक्षा प्रगति पर सर्व शिक्षा अभियान के प्रभाव का अध्ययन इस बात को समझने की कोशिश करेगा कि इस राष्ट्रीय पहल ने भारत में शिक्षा के क्षेत्र में किस तरह सुधार

लाए। सर्व शिक्षा अभियान का उद्देश्य बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा में लाना था, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ पहले शिक्षा की पहुंच सीमित थी। इस कार्यक्रम ने नामांकन दर में वृद्धि, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रसार, और विशेष रूप से लड़कियों, गरीबों और विकलांग बच्चों को प्राथमिक शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित की। इसके साथ ही, यह शिक्षकों के प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम में सुधार और स्कूलों की सुविधाओं में बढ़ोतरी के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने में मददगार साबित हुआ। यह अध्ययन यह भी विश्लेषण करेगा कि **सर्व शिक्षा अभियान** ने शिक्षा के क्षेत्र में समावेशन और समानता को कैसे बढ़ावा दिया और इसके प्रभाव से सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े समुदायों में कितनी सकारात्मक बदलाव आई। प्रस्तुत शोध न्यायदर्श चयन हेतु अध्ययन में माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत किशोरों को लिया गया है **जिसमें कुल 300 किशोरों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा किया गया है। इनमें 9वी और 10वी कक्षा से 150-150 किशोर को लिया गया है,** प्रदत्तों के संकलन एवं मूल्यांकन के पश्चात अगला पद उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग में एनोवा (प्रसरण विधि) तथा टी-अनुपात का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए **मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी मूल्य** का उपयोग किया गया है।

कूटशब्दः माध्यमिक स्तर, सर्व शिक्षा अभियान, प्राथमिक शिक्षा ।

1. प्रस्तावना

सर्व शिक्षा अभियान ने प्राथमिक शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस अभियान का उद्देश्य सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और समान शिक्षा प्रदान करना है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ शिक्षा के संसाधन कम हैं।[1] सर्व शिक्षा अभियान ने प्राथमिक विद्यालयों के विकास और संवर्द्धन, शिक्षकों के प्रशिक्षण और शिक्षा की समावेशिता पर जोर दिया है। इस पहल ने वंचित समूहों और लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता दी है, जिससे शैक्षिक अवसरों की व्यापकता और गुणवत्ता दोनों में वृद्धि हुई है। सर्व शिक्षा अभियान ने सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देकर शैक्षिक प्रबंधन में स्थानीय व्यक्तियों की भागीदारी को बढ़ाया है। परिणामस्वरूप, सर्व शिक्षा अभियान ने प्राथमिक शिक्षा तक पहुँच और उसकी गुणवत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि की है, जिससे यह सुनिश्चित हुआ है कि प्रत्येक बच्चे को बेहतर शिक्षा मिले।[2]

सर्व शिक्षा अभियान सार्वभौमिक शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारत की समकालीन शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत क्रियान्वित एक पहल है, जिसकी शुरुआत 2001 में हुई थी। इसका उद्देश्य मौलिक शिक्षा प्रदान करना है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि प्रत्येक बच्चे को उन्नत शैक्षिक अनुभव प्राप्त हो। भारत, विश्व की सबसे बड़ी शिक्षा व्यवस्थाओं में एक होने पर भी, यहाँ स्कूल न जाने वाले बच्चो की संख्या विश्व में

[1] Dr. K.A. Sheela 2016 Sarva Shiksha Abhiyan publishe Neelkamal ISBN-10 8183165850

[2] कटोच, कुलदीप सिंह एवं कुमार, सुनील (2014). सर्व शिक्षा अभियान इन मण्डी डिस्ट्रिक्ट ऑफ हिमाचल प्रदेश: एक अध्ययन, स्कूलरली रिसर्च जर्नल फॉर ह्युमिनिटी साइन्स एण्ड इग्लिंश लैग्युज, वाल्यूम-प्, इश्यू-ट, अगस्त-सितम्बर 2014, पृ0 706-717

सर्वाधिक अर्थात् कुल जनसख्या का **22%** है। सर्वप्रथम सन् **1910** में गोपालकृष्ण गोखले ने केन्द्रीय सभा में अनिवार्य प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा के विकास के बारे में एक प्रस्ताव पेश किया जिसे शासन द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। सन् **1917** में बम्बई क्षेत्र में बहुत जद्दोजहद के बीच प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम को सर्वप्रथम अनिवार्य किया गया तथा **1937** तक इस कार्यक्रम ने गति पकड़ी और इसे कई प्रान्तों में लागू कर दिया गया।[3]

भारत में प्राथमिक शिक्षा की शुरुआत ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता के दौर में हुई थी। मिशनरियों ने प्राथमिक शिक्षा स्थापित करने का प्रयास किया। उनका उद्देश्य अपने उपनिवेश के युवाओं के लिए शिक्षा के अवसर स्थापित करना और शिक्षा के माध्यम से ईसाई धर्म का प्रसार करना था। 1813 के चार्टर के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी ने पहला प्रयास किया। 1854 की घोषणा में पहली बार सार्वजनिक शिक्षा के आयोजन की जिम्मेदारी स्वीकार की गई और अनुदान सहायता प्रणाली का प्रस्ताव रखा गया। 1859 में स्टैनले के घोषणा पत्र की सिफारिशों के फलस्वरूप सरकार ने प्राथमिक शिक्षा कर लगा कर प्राथमिक शिक्षा का विकास करने की चेष्टा की।

1882 में भारतीय शिक्षा आयोग की सिफारिशों के परिणाम स्वरूप सरकार ने प्राथमिक शिक्षा का उत्तरदायित्व स्थानीय संस्थाओं को सौंप कर अपना पीछा छुड़ा लिया। लार्ड कर्जन वह प्रथम वायसराय था, जिसने 1904 के सरकारी प्रस्ताव से प्राथमिक शिक्षा का विकास करना सरकार का प्रमुख दायित्व बताया। उसने प्राथमिक शिक्षा के विस्तार के साथ-साथ उसकी गुणात्मक उन्नति की ओर भी ध्यान दिया। फलस्वरूप 1911 तक प्राथमिक शिक्षा की प्रगति बहुत तीव्र गति से हुई।[4]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् प्राथमिक शिक्षा ने अपने विकास के स्वर्णिम युग में प्रवेश किया। संसार के सभी प्रगतिशील देशों के समान भारत ने भी बालकों एवं बालिकाओं को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने के अपने उत्तरदायित्व को स्वीकार किया और देश में प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण हेतु प्रयास किये गए। प्राथमिक शिक्षा वह औपचारिक शिक्षा है जिसमें 6-14 आयु वर्ग के बालक-बालिका नियमित रूप से शिक्षा प्राप्त करना आरम्भ कर देते हैं। अतः कक्षा-1 से लेकर कक्षा-8 तक की शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है।

2. संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

मेहता, अरुण सी. (2005)[5] ने **अध्ययन 'भारत में प्राथमिक शिक्षा, हम कहाँ ठहरते हैं' में देश के विभिन्न राज्यों में प्राथमिक शिक्षा स्तर के विभिन्न सूचकों को तुलनात्मक रूप में क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित ढंग**

---

[3] यादव, राजेश कुमार 2011 उच्च प्राथमिक स्तर पर सर्व शिक्षा अभियान के क्रियान्वयन का समीक्षात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, डॉ0 राममनोहर लोहिया विश्वविद्यालय, फैजाबाद।

[4] Bajpai, N., & Goyal, S. (2004). Primary education in India: Quality and coverage issues.

[5] Mehta, A. C., & Abhiyan, S. S. (2005). Elementary education in India: where do we stand?: district report cards, 2005. *(No Title)*.

से प्रस्तुत किया है। प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न हस्तक्षेपों के प्रभाव का अध्ययन भी शोधकर्ता द्वारा किया गया।

ट्रेविनो, रॉबर्ट एडवर्ड ने सन् **(2000)**[6] में माता-पिता की भागीदारी और छात्र उपलब्धि की जाँच की। यह प्रवासी उच्च उपलब्धि वाले मैक्सिकन मूल के परिवारों का एक अध्ययन है। अध्ययन इस तथ्य की पुष्टि करता है कि सक्रिय माता-पिता और बेहतर छात्र उपलब्धि के बीच एक मजबूत संबंध है। इन परिवारों में सर्व शिक्षा अभियान सभी के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता है और व्यावहारिक रूप से सभी पारिवारिक निर्णयों का मार्गदर्शन करती है। फिर से, माता-पिता खुद को केवल उन गतिविधियों में शामिल करते हैं जिनका उनके बच्चे की उपलब्धि पर सीधा और लाभकारी प्रभाव पड़ता है।

वेल्स, स्टीवन पी ने सन् **(2006)**[7] में **पालक माता-पिता और पालक देखभाल में बच्चों की शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी** का अध्ययन किया। नमूने में पालक माता-पिता शामिल थे जिन्होंने ओक्लाहोमा मानव सेवा विभाग, बच्चों और परिवार सेवा प्रभाग के तत्वावधान में पालक देखभाल में बच्चों का पालन-पोषण किया। इन पालक माता-पिता को उनके घरों में बच्चों की देखभाल और 6 से 12 वर्ष के बच्चों के मामले में प्रतिपूर्ति की गई थी। पालक माता-पिता ने बताया कि, वास्तव में, उन्होंने मध्यम स्तर पर माता-पिता की भागीदारी गतिविधि में भाग लिया और पालक देखभाल में बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को संबोधित करने में स्कूलों के साथ साझेदारी केंद्रित भूमिका का समर्थन किया।

पटगिरी, एच. (2017)[8] ने अपने शोध पत्र में **असम के बारपेटा जिले में विशेष जरूरतों वाले बच्चों (सीडब्ल्यूएसएन) के शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित करने में सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए)** की भूमिका का आकलन करने का प्रयास किया। अध्ययन के लिए कुल 909 नमूनों का चयन किया गया था। डेटा संग्रह के लिए साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया था। अध्ययन ने सीडब्ल्यूएसएन से संबंधित कई महत्वपूर्ण मुद्दों को प्रकाश में लाया। यह पाया गया कि एसएसए इस जिले के सभी सीडब्ल्यूएसएन को स्कूल लाने में सफल नहीं है।

3. शोध समस्या के तकनीकि शब्दों का संक्षिप्त विवरण

शोध अध्ययन में प्रयुक्त विशिष्ट पदों की व्याख्या शोध समस्या के स्पष्टीकरण हेतु आवश्यक एवं महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसके माध्यम से शोध में प्रयोग किये गये शब्दों के निहितार्थ पूर्णतः स्पष्ट हो जाते है। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त शब्दों का स्पष्टीकरण निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है-

- **प्राथमिक स्तर**

[6] Trevino, Robert Edward. (2000). Parent involvement and remarkable student achievement: A study of Mexican -origin families of migrant highachievers. DAI. vol. 61 no. 11 240pp.May 2001.

[7] Wells, Steven P. (2006). Foster parents and parental involvement in the education of children in foster care. DAI. Vol.67 No.1 229pp. July 2007

[8] Patgiri, H. (2017). Right to education and children with special needs: Role of Sarva Shiksha Abhiyan in Barpeta district of Assam. International journal of humanities and social sciences , 7(1), 45-53.

प्राथमिक स्तर स्कूली बच्चों की शिक्षा से संबंधित है, जहाँ बच्चों की बुनियादी शिक्षा शिक्षकों की प्रेरणा, परिवार के सहयोग और प्रोत्साहन तथा उचित पुस्तक सामग्री द्वारा स्थापित की जाती है। इस स्तर के लिए पुस्तक सामग्री नवीन और रोचक होनी चाहिए। यह केवल कक्षा **1-5** ग्रेड के लिए है।[9] दूसरे शब्दों में प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा से तात्पर्य है वह शिक्षा जो बच्चों की शैक्षिक यात्रा के आरंभिक चरण में प्रदान की जाती है। यह शिक्षा आमतौर पर नर्सरी, प्री-प्राइमरी और प्राथमिक विद्यालयों में दी जाती है।

- **शिक्षा**

रवीन्द्रनाथ टैगोर: "शिक्षा मन को परम सत्य की खोज करने में सक्षम बनाती है, जो हमें आंतरिक प्रकाश और प्रेम की संपदा प्रदान करती है तथा जीवन को सार्थकता प्रदान करती है।"[10]

दुर्खीम: "शिक्षा को युवा पीढ़ी के समाजीकरण के रूप में देखते हैं। वे आगे कहते हैं कि "यह बच्चे पर देखने, महसूस करने और कार्य करने के उन तरीकों को थोपने का एक सतत प्रयास है, जो वह सहज रूप से नहीं प्राप्त कर सकता।"[11]

प्लेटो "शिक्षा सही समय पर खुशी और दर्द महसूस करने की क्षमता है"[12]

- **सर्व शिक्षा अभियान**[13]

सर्व शिक्षा अभियान भारत सरकार का एक व्यापक और एकीकृत फ्लैगशिप कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। जिसका उद्देश्य सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा (यूईई) प्राप्त करना है, जो पूरे देश को मिशन मोड में कवर करता है। एसएसए को 2001-2002 में राज्य सरकारों और स्थानीय स्वशासन के साथ साझेदारी में शुरू किया गया था। इस संदर्भ में एसएसए का मतलब पश्चिम बंगाल राज्य में शुरू किया गया सर्व शिक्षा अभियान होगा। यह अभियान विशेष रूप से 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित करने पर केंद्रित है।

4. अध्ययन के उद्देश्य

- प्राथमिक स्तर पर **SSA** कार्यक्रम के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण में उनके लिंग के अनुसार अध्ययन करना
- प्राथमिक स्तर पर **SSA** कार्यक्रम के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण में उनके उम्र के अनुसार अध्ययन करना

5. अध्ययन की परिकल्पना

---

[9] Singh,Aanand, Shruti (2018, April 18). Lecture on Revamping Primary Education: issues and challenges. Department of education, Shambhunath college of Education Pryagraaj.

[10] Ghosh, R. RABINDRANATH TAGORE'S THOUGHTS ON EDUCATION AND LIBRARY IN THE MODERN CONTEXT.

[11] Dukheim 1963 Education and Sociology. Glencoe free press 4rth edition vikas publishing house Pvt.Ltd

[12] Plato (2006),The Republic, in Allen, R.E. ed. New Haven: Yale University Press

[13] Dr. K.A. Sheela 2016 Sarva Shiksha Abhiyan publishe Neelkamal ISBN-10 8183165850

- प्राथमिक स्तर पर SSA कार्यक्रम के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण में उनके लिंग के अनुसार कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
- प्राथमिक स्तर पर SSA कार्यक्रम के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण में लड़के और लड़कियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

6. शोध समस्या कथन

शोध समस्या से तात्पर्य एक ऐसे प्रश्नवाचक कथन या समस्या कथन से होता है जिसमें चरों के बीच कोई विशेष प्रकार के संबंध होने की कल्पना की जाती है। एक बेहतर शोध समस्या का चयन या निर्माण शोध रिपोर्ट की विषय वस्तु की गुणवत्ता तथा कार्य की वैधता आदि के रूप में परिलक्षित होता है। समस्या के परिभाषीकरण से तात्पर्य समस्या का स्पष्ट रूप से एवं विस्तार पूर्वक वर्णन करना है।

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत शोधकर्ता ने **प्राथमिक शिक्षा प्रगति पर सर्व शिक्षा अभियान के प्रभाव का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन** किया है।

7. शोध विधि

वर्तमान अध्ययन के लिए जिस प्रकार के शोध का उपयोग किया गया है वह विवरणात्मक एवं खोजपूर्ण शोध है क्योंकि अनुसंधान के अध्ययन का क्षेत्र नया है और नए अध्ययन की नींव रखने वाले नए आधार की नींव रखने का प्रयास कर सकता है। यह अध्ययन को नया दृष्टिकोण भी दे सकता है और भविष्य में वर्णनात्मक और प्रयोगात्मक अध्ययनों को जन्म दे सकता है। प्रस्तुत अनुसंधान की प्रकृति गुणात्मक एवं सकारात्मक है एवं शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।

1. **डेटा संग्रहः** प्राथमिक डेटा स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किया जायेगा और द्वितीयक डेटा वेबसाइट, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं आदि के माध्यम से एकत्र किया जायेगा।
2. **अध्ययन क्षेत्रः** प्राथमिक शिक्षा प्रगति पर सर्व शिक्षा अभियान के प्रभाव का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन तक ही सीमित रहेगा।
3. **नमूना आकारः** प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत किशोरों को लिया गया है जिसमें कुल 300 किशोरों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा किया गया है।

8. प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्शचयन विधि

प्रस्तुत शोध समस्या के न्यादर्श के चुनाव हेतु स्तरित यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया है।

9. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत उपकरण के रुप में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत 300 छात्रों को लिया गया है।

10. प्रदत्त विश्लेषण व व्याख्या

तालिका 1 उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय विवरण

क्रमांक	जनसांख्यिकीय चर	स्वरूप	संख्या	%

1	**लिंग**	पुरुष	151	50.3%
		महिला	149	49.7%
2	**आयु**	15-20 वर्ष से कम	181	60.3%
		20-25 वर्ष	119	39.7%
3	**कक्षा**	10वी	150	50.0%
		9वी	150	50.0%
4	**जाति**	सामान्य वर्ग	99	33.0%
		पिछड़ा वर्ग	76	25.3%
		अनुसूचित जाति	65	21.7%
		अनुसूचित जनजाति	60	20.0%
5	**क्षेत्र**	ग्रामीण	42.7	42.7%
		क्षेत्रिय	57.3	57.3%

तालिका 1 उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय विशेषताओं को प्रदर्शित करती है, जिसमें उनका "लिंग, आयु, शिक्षा स्तर, जाति, क्षेत्र तक पहुंच" शामिल है। ये विशेषताएँ तालिका में पूरी तरह से प्रदान की गई हैं। सर्वेक्षण के परिणाम तालिका 1 में दिखाए गए हैं, जो दर्शाता है कि 50.3% उत्तरदाता पुरुष थे और 49.7% महिलाएँ थीं। उत्तरदाताओं की आयु नीचे संक्षेप में दी गई है: उत्तरदाताओं की आयु नीचे संक्षेप में दी गई है: 15-20 वर्ष से कम 60.3%, 20-25 वर्ष 39.7 उत्तरदाताएँ हैं। उत्तरदाताओं की कक्षा का स्तर 10वी के 50.0% 9वीं के 50.0% हैं। उत्तरदाताओं की जाति सामान्य वर्ग के 33.0% पिछड़ा वर्ग 25.3% अनुसूचित जाति 21.7% एवं अनुसूचित जनजाति के 20.0% उत्तरदाताएँ सम्मिलित हैं। जवाब दो अलग-अलग तरह के स्कूलों से आते हैं: ग्रामीण (42.07%) और शहरी (57.03%) दोनों ही प्रकार के हैं।

तालिका 4.2

युग्मित नमूने परीक्षण							
	युग्मित अंतर				टी	डीएफ	**Sig. (2-**
	माध्य	मानक	मानक	अंतर का 95% विश्वास			

			विचलन	त्रुटि माध्य	अंतराल				tailed)
					निचला	ऊपरवाला			
जोड़ा 1	लिंग - सर्व शिक्षा अभियान	-17.88667	2.44138	.14095	-18.16405	-17.60928	-126.898	299	.000

ऊपर दिये गये तालिका 4.2 में युग्मित नमूने परीक्षण (**Paired Sample Test**) के परिणामों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें **लिंग** और **सर्व शिक्षा अभियान** के बीच अंतर की जांच की गई है। टेबल में दिए गए **माध्य अंतर** का मान -17.88667 है, जिसका अर्थ है कि दोनों समूहों (लिंग और सर्व शिक्षा अभियान) के बीच औसतन -17.88667 का अंतर है। **मानक विचलन 2.44138** और **मानक त्रुटि माध्य 0.14095** है, जो बताता है कि दोनों समूहों के बीच अंतर में कुछ फैलाव है, लेकिन यह अपेक्षाकृत कम है। **अंतर का 95% विश्वास अंतराल -18.16405** से **-17.60928** के बीच है, जो यह दर्शाता है कि हम **95%** आत्मविश्वास के साथ कह सकते हैं कि वास्तविक अंतर इस सीमा के भीतर है। **टी-मान -126.898** है और **डीएफ** (डिग्री ऑफ फ्रीडम) **299** है, जो यह संकेत करता है कि नमूना आकार बड़ा है और परीक्षण परिणाम मजबूत हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात, **Sig. (2-tailed)** का मान **0.000** है, जो **0.05** से बहुत कम है, और यह सांख्यिकीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ है कि **लिंग और सर्व शिक्षा अभियान** के बीच अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, इस परीक्षण का निष्कर्ष यह है कि दोनों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर पाया गया है।

तालिका 4.3

युग्मित नमूने परीक्षण									
		युग्मित अंतर					टी	डीएफ	Sig. (2-tailed)
		माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि माध्य	अंतर का 95% विश्वास अंतराल				
					निचला	ऊपरवाला			
जोड़ा 1	उम्र - सर्व शिक्षा	-18.0533	2.48416	.14342	-18.3355	-17.7710	-125.87	299	.000

	अभियान	3			8	9	5		

ऊपर दिये गए तालिका 4.3 में युग्मित नमूने परीक्षण (Paired Sample Test) के परिणामों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें **उम्र** और **सर्व शिक्षा अभियान** के बीच अंतर की जांच की गई है। **माध्य अंतर** का मान -18.05333 है, जो यह दर्शाता है कि दोनों समूहों (उम्र और सर्व शिक्षा अभियान) के बीच औसतन -18.05333 का अंतर है। **मानक विचलन** 2.48416 और **मानक त्रुटि माध्य** 0.14342 है, जो यह संकेत करता है कि अंतर में कुछ फैलाव है, लेकिन यह अपेक्षाकृत कम है। **अंतर का 95% विश्वास अंतराल** -18.33558 से -17.77109 के बीच है, जो यह दर्शाता है कि हम 95% आत्मविश्वास के साथ कह सकते हैं कि वास्तविक अंतर इस सीमा के भीतर है। **टी-मान** -125.875 है और **डीएफ** (डिग्री ऑफ फ्रीडम) 299 है, जो यह संकेत करता है कि नमूना आकार पर्याप्त बड़ा है और परीक्षण परिणाम मजबूत हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात, Sig. (2-tailed) का मान 0.000 है, जो 0.05 से बहुत कम है, और यह सांख्यिकीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसका मतलब यह है कि **उम्र और सर्व शिक्षा अभियान** के बीच अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, इस परीक्षण का निष्कर्ष यह है कि दोनों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर पाया गया है।

11. निष्कर्ष

सर्व शिक्षा अभियान (SSA) ने भारतीय प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण सुधार किए हैं, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक बदलाव आए हैं। इस अभियान के तहत विशेष रूप से ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में बच्चों का नामांकन बढ़ा, जिससे शिक्षा तक पहुंच में वृद्धि हुई। SSA ने विशेष रूप से लड़कियों, विकलांग बच्चों और आदिवासी समुदायों के लिए शिक्षा को सुनिश्चित किया, जिससे इन वर्गों में समानता और समावेशन को बढ़ावा मिला। शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने में मदद की, हालांकि, कुछ क्षेत्रों में शिक्षकों की कमी और गुणवत्ता में अंतर बना रहा।

स्थानीय समुदायों और पंचायतों की भूमिका को मजबूत किया गया, जिससे शिक्षा के प्रति जागरूकता और सक्रिय समर्थन मिला। हालांकि, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों का वितरण असमान था। अंततः, SSA ने प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में समग्र सुधार में महत्वपूर्ण योगदान दिया, लेकिन भविष्य में इन सुधारों को निरंतर बनाए रखने और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अतिरिक्त प्रयासों की आवश्यकता है। SSA के प्रभाव ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षा का सार्वभौमिकरण तभी संभव है जब प्रशासन, समुदाय और सरकार मिलकर काम करें।

संदर्भ सूची

1. Dr. K.A. Sheela 2016 Sarva Shiksha Abhiyan publishe Neelkamal ISBN-10 8183165850
2. कटोच, कुलदीप सिंह एवं कुमार, सुनील (2014). सर्व शिक्षा अभियान इन मण्डी डिस्ट्रिक्ट ऑफ हिमाचल प्रदेश: एक अध्ययन, स्कूलरली रिसर्च जर्नल फॉर ह्युमिनिटी साइन्स एण्ड इग्लिंश लैग्युज, वाल्यूम-प्, इश्यू-ट, अगस्त-सितम्बर 2014, पृ0 706-717
3. यादव, राजेश कुमार 2011 उच्च प्राथमिक स्तर पर सर्व शिक्षा अभियान के क्रियान्वयन का समीक्षात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, डॉ0 राममनोहर लोहिया विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
4. Bajpai, N., & Goyal, S. (2004). Primary education in India: Quality and coverage issues.
5. Mehta, A. C., & Abhiyan, S. S. (2005). Elementary education in India: where do we stand?: district report cards, 2005. (No Title).
6. Trevino, Robert Edward. (2000). Parent involvement and remarkable student achievement: A study of Mexican -origin families of migrant highachievers. DAI. vol. 61 no. 11 240pp.May 2001.
7. Wells, Steven P. (2006). Foster parents and parental involvement in the education of children in foster care. DAI. Vol.67 No.1 229pp. July 2007
8. Patgiri, H. (2017). Right to education and children with special needs: Role of Sarva Shiksha Abhiyan in Barpeta district of Assam. International journal of humanities and social sciences , 7(1), 45-53.
9. Singh,Aanand, Shruti (2018, April 18). Lecture on Revamping Primary Education: issues and challenges. Department of education, Shambhunath college of Education Pryagraaj.
10. Ghosh, R. RABINDRANATH TAGORE’S THOUGHTS ON EDUCATION AND LIBRARY IN THE MODERN CONTEXT.
11. Dukheim 1963 Education and Sociology. Glencoe free press 4rth edition vikas publishing house Pvt.Ltd

12. Plato (2006),The Republic, in Allen, R.E. ed. New Haven: Yale University Press.

13. Dr. K.A. Sheela 2016 Sarva Shiksha Abhiyan publishe Neelkamal ISBN-10 8183165850

****